B.A I H.o.

P. II   हिन्दू राज्य शास्त्र के स्रोत

Q6. Discuss the various Sources of Hindu Polity?

Ans —

स्रोत

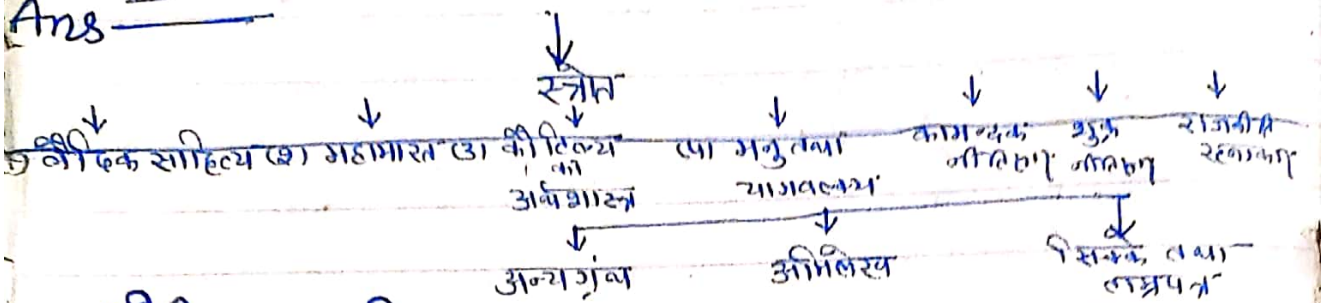

(1) वैदिक साहित्य (2) महाभारत (3) कौटिल्य का अर्थशास्त्र (4) मनु तथा याज्ञवल्क्य कामन्दक नीतिसार शुक्र नीतिसार राजनीति रत्नाकर

अन्य ग्रंथ अभिलेख सिक्के तथा ताम्रपत्र

(1) **वैदिक साहित्य :** → भारत में राज्य शास्त्र सम्बन्धी विवरण वैदिक साहित्य में मिलता है। वेदों के विभिन्न श्लोकों द्वारा उस समय की राजव्यवस्था का परिचय मिलता है। ये श्लोक विशेषतया राजा से सम्बन्धित हैं जिसमें राज्याभिषेक, राज्यारोहण तथा उसके बाद किये जाने वाले यज्ञों का वर्णन मिलता है।

(2) **महाभारत :** — राज्य शास्त्र के सम्बन्ध में विशेष विवरण हमें महाभारत से प्राप्त होता है। महाभारत में शांति पर्व में राजधर्म के संदर्भ में राजा तथा सरकार का उल्लेख किया गया है। राजधर्म का ऐतिहासिक महत्व कुछ भी रहा हो किन्तु इससे (1) राज्य की उत्पत्ति तथा (2) सरकार के विविध कार्यों के बारे में विवरण मिलता है।

(3) **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** — यह राज्यशास्त्र का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में विभिन्न विषयों का निरूपण किया है। लेकिन इसका मुख्य विषय राज्यशास्त्र है। कौटिल्य का मुख्य विषय राजा को शासन कार्य में मार्ग दिखलाना था। कौटिल्य द्वारा यह बतलाया गया कि (1) राजा को क्या करना चाहिए। (2) कि किस प्रकार के व्यक्तियों को प्रमुख पदों पर नियुक्त करना चाहिए। (3) अपने अधिकारियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए तथा (4) परराष्ट्र नीति के सम्बन्ध में क्या करना चाहिए, (5) दंडनीति का उल्लेख करते हुए कौटिल्य ने बतलाया है "कठोर दंड देने वाले राजा से सभी प्राणी उद्विग्न हो उठते हैं किन्तु दंड में ढिलाई कर देने से भी लोक राजा की अव-

Scanned with CamScanner

(2)

हवन करने लगता है। इसीलिए राजा को समुचित दंड देने वाला होना चाहिए। राजा की जीवनचर्या के प्रकरण में कौटिल्य ने बतलाया है कि "एक पहिये की गाड़ी की

मानसोल्लास

भाँति राजकाज भी बिना सहायता कोष के नहीं चलाया जा सकता है इसलिए राजा को चाहिए की वह सुयोग्य अमात्यों को नियुक्त कर उनके परामर्शों को हृदयागंम करें"। अमात्यों की नियुक्ति के संदर्भ में कौटिल्य ने सर्वप्रथम अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के मतों का उल्लेख किया है। जैसे आचार्य भारद्वाज के अनुसार "राजा अपने सहपाठियों को अमात्य पद पर नियुक्त करे क्योंकि उनके हृदय की पवित्रता से वह सुपरिचित होता। कौटिल्य ने अपना मत प्रकट करते हुए बतलाया है कि "राजा विद्या, बुद्धि, साहस गुण, दोष काल और पात्र का विचार करके अमात्यों की नियुक्ति करे किन्तु उन्हें अपना मंत्री कदापि न बनाये"।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्यशास्त्र के व्यवहारिक पक्ष से अधिक सम्बंधित है। राज्यशास्त्र के सैद्धांतिक पक्षों का इनमें बहुत कम विवेचन हुआ है। Altekar ने इसका उल्लेख निम्नप्रकार से किया है "एक प्रबन्धक के लिए अर्थशास्त्र अधिक सिद्धान्तीय होने के अतिरिक्त अधिक मानवीय है। इस शास्त्र की यह प्रवृति मनोविज्ञान, राजशास्त्र और प्रबन्ध के प्रारंभिक सिद्धांतों के विषय में अधिक स्पष्ट है। यह सरकार के प्रयोगात्मक गुणों से अधिक सम्बंधित है। यह शांतिकालीन और युद्धकाल में सरकारी कामों में अधिक उपयोगी है। लेकिन राज्यशास्त्र के व्यवहारिक पक्ष का वर्णन इतने में विस्तार साथ किया गया है कि उसमें लगभग राज्य के सभी पक्षों का समावेश हो जाता है। इसमें दंडनीति, धर्म और अधर्म दण्डनीति के उपयोग राजा की दिनचर्या राज्य उच्चाधिकारियों को दंड व्यवस्था राज्य के सप्त के स्वरूप एवं कर्तव्यों का ...

शेष प्रकरणों में संधि-विजित शत्रु के प्रति व्यवहार सैन्य संगठन, शत्रु सेना से मुकाबला, आक्रमण, दूतकर्म इत्यादि बातों का विवेचन किया गया है।

(4) **मनु तथा याज्ञवल्क्य** —→ कौटिल्य के अर्थशास्त्र के उपरांत मनु, विष्णु और याज्ञवल्क्य स्मृतियों में राजा के कर्तव्य राज्यकर्मचारियों के कार्य दंड और व्यवहार विधान परराष्ट्र सम्बन्धी आदि विषयों का विवेचन किया गया है।

(5) **कामन्दक नीति सार:** —→ इस ग्रंथ में राजा तथा उसके कुटुम्ब का सविस्तार वर्णन है। राजा के परिवार पर अधिकांश वर्णन को केन्द्रित करने से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि इस काल में राजतंत्र अत्यधिक शक्तिशाली हो गया होगा।

6) **शुक्र नीतिसार:** —— हिन्दू राज्य शास्त्र के अध्ययन की दृष्टि से शुक्रनीतिसार का अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में शासन व्यवस्था का जैसा आदि से अंत तक वर्णन है, वह अर्थशास्त्र के अलावा अन्य किसी ग्रंथ में प्राप्त नहीं है। इस ग्रंथ का रचनाकार शुक्र अथवा उशना को बताया जाता है। यद्यपि शुक्रनीति नामक कोई भी ग्रंथ उपलब्ध नहीं है, किन्तु फिर भी शुक्र नीतिसार को शुक्र की नीति का सार माना गया है।

इस ग्रंथ में दण्डनीति को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। नृपतंत्र की काफी विशद व्याख्या की गयी है। इसमें शासन व्यवस्था का उल्लेख करते हुए राजा, मंत्री तथा अन्य राजकर्मचारियों के कार्यों का वर्णन किया है। शुक्र के मतानुसार शासन व्यवस्था का लक्ष्य समाज की सर्वांगीण उन्नति करना था। राज्य का यह कर्तव्य है कि वह प्रजा के लिए धर्मशालाओं तथा चिकित्सालयों का निर्माण करें और विद्या को प्रोत्साहन दे। समाज को आर्थिक प्रगति की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करे।

इस इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ द्वारा प्राचीन राज्य व्यवस्था के बारे में अनेक सूचनाएँ मिलती हैं जो कि राज्य शास्त्र के अन्य ग्रंथों में उपलब्ध नहीं है। उदाहरणार्थ दरबार में विभिन्न श्रेणी के दरबारी कहां बैठते थे, उसके कितने सहायक होते थे मंत्री किस प्रकार अपना दैनिक कार्य सम्पन्न करते थे।

7. **राजनीति रत्नाकर:** → चण्डेश्वर द्वारा लिखा गया राजनीति रत्नाकर भी राज्य शास्त्र की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, इसके अंतर्गत अनेक आचार्यों एवं ग्रंथों का उल्लेख किया गया है।

8. **मानसोल्लास:** → चालुक्य नृपति सोमेश्वर द्वारा लिखा हुआ मानसोल्लास ग्रंथ के अन्तर्गत भी राज्य शास्त्र का विवेचन किया गया है। इसमें राजा के उपभोग, आमोद, राज्यवृद्धि, राज्यप्राप्ति के अवसर सैन्य संगठन, शत्रु अभियान, राजा के गुरु मंत्रि की योग्यता, कोषाधिपति के कर्तव्य इत्यादि का विवेचन किया गया है।

9. **अन्य ग्रंथ:** → उपयुक्त ग्रंथों के अतिरिक्त संस्कृत, पाली तथा प्राकृतिक भाषाओं के अनेक ग्रंथ हिन्दू राज्य शास्त्र के उपर प्रकाश डालते हैं इनमें पंचतंत्र की कथाएँ, स्मृति ग्रंथ, रामायण, महाभारत, विदेशी यात्रियों का विवरण आदि हैं इसी प्रकार काव्य, नाटक, इतिहास ग्रंथों में रघुवंश, हितोपदेश, कादम्बरी, दशकुमार चरित्र, राजतरंगिणी इत्यादि में भी तत्कालीन राज्य व्यवस्था के बारे में विवरण मिलता है। जैन तथा बौद्ध साहित्य में अनेक ग्रंथ राज्य शास्त्र के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो इस पर प्रकाश डालते हैं।

10. **अभिलेख, सिक्के तथा ताम्रपत्र** → उपयुक्त ग्रंथों के अभाव अतिरिक्त प्राचीन अभिलेखों, सिक्कों तथा ताम्रपत्रों का भी राज्य शास्त्र के संदर्भ में महत्वपूर्ण स्थान है। मौर्य तथा गुप्त काल के

Scanned with CamScanner

शिलालेखों प्राप्त होते हैं उनके आधार पर तत्कालीन राज्य व्यवस्था के बारे में सूचनाएँ संकलित की जा सकती हैं इसी प्रकार राजकवियों तथा राजाधिकारियों द्वारा ताम्रपत्रों को लिखने का प्रचलन था। इसमें भी शासन व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दू राज्यशास्त्र का ज्ञान कराने वाले साधन हिन्दू साहित्य के विशाल क्षेत्र में बिखरे पड़े हैं। वैदिक संस्कृत तथा प्राकृतिक ग्रंथ शिलालेखों तथा सिक्के राज्यशास्त्र के विविध विषयों पर प्रकाश डालते हैं।

Scanned with CamScanner